सुर

वर ....

न दीजिए– कुछ शब्दों के दो-दो अर्थ होते हैं। उन्हें अनेकार्थी शब्द कहा जाता है।

ब्दों से वाक्य बनाकर अपनी कॉपी में लिखिए–

नी 2. बड़ाई 3. समय

5. पौधा 6. सुगंध

रचना कौशल (Creative Skills)

अनुसार फूलों के चित्र बनाइए–

राजा

हमारा राष्ट्रीय फूल

विशेषता क्या है? पता कीजिए।

ो अच्छी बातें और दो गलत बातें लिखिए। उन गलत बातों में सुधार लाने के
ं, यह भी लिखिए।

2 अभ्यास का महत्व

वरदराज नामक एक बालक था। जब वह पाँच वर्ष का हो गया तब पिता ने उसे पढ़ने के लिए गुरु जी के आश्रम में भेज दिया। गुरु जी के आश्रम में कई शिष्य पढ़ते थे। बालक वरदराज भी वहाँ रहकर पढ़ने लगा। उन दिनों बालक गुरुओं के आश्रम में रहकर ही विद्या प्राप्त करते थे।

वरदराज मंदबुद्धि का बालक था। उसे कुछ याद नहीं रहता था। उसके सहपाठी आगे बढ़ते गए। वह एक वर्ष की पढ़ाई में कई-कई वर्ष लगाता रहा। गुरु जी उसे अलग से भी पढ़ाते-समझाते, पर सब बेकार। उसकी समझ में कुछ नहीं आता था। पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था।

गुरु जी के पास रहते हुए वरदराज को पाँच वर्ष हो गए थे पर वह कुछ विशेष सीख नहीं सका था। सहपाठी उसे छेड़ते, उसका मज़ाक उड़ाते। उसके साथ जो पढ़ने आए थे, वे आगे बढ़ गए थे। जो बाद में आए थे, वे भी उसे पीछे छोड़कर आगे निकल गए।

एक दिन गुरु जी ने निराश होकर कहा, ''बेटा वरदराज! मैं समझता हूँ कि पढ़ना-लिखना तुम्हारे वश में नहीं है। मैंने कितने प्रयत्न

मंदबुद्धि (moron) = जो किसी चीज़ को आसानी से सीख न पाता हो, कमज़ोर बुद्धिवाला

किए, तुम्हें कितना पढ़ाया और समझाया, पर कुछ लाभ नहीं हुआ। इससे तो यही अच्छा है, घर जाओ और वहाँ का काम-काज देखो।''

वरदराज चिंता में पड़ गया। वह सोचने लगा, 'घर जाकर पिता जी को मैं क्या मुँह दिखाऊँगा! कैसे कहूँगा कि गुरु जी ने मुझे पढ़ाने से मना कर दिया है। लोग क्या कहेंगे कि पिता तो माने हुए विद्वान और बेटा मूर्ख!' यह सोचकर वरदराज की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। उसे अपना भविष्य **अंधकारमय** दिखाई देने लगा। उसने अपने सामान की गठरी बाँधी, गुरु जी के चरण छुए, साथियों से गले मिला और भारी मन से विदा हुआ। वह उदास अनमना-सा चल रहा था। यों घर वापस जाने का उसका ज़रा भी मन नहीं था पर और कोई ठौर-ठिकाना भी नहीं था। कहाँ जाए, क्या करे, उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

वह आश्रम से सवेरे चला था और अब दोपहर हो गई थी। रास्ते में खाने के लिए गुरु जी ने वरदराज को सत्तू दिया था। उसे भूख लग आई थी और प्यास भी। चलते-चलते उसे एक कुआँ दिखाई दिया। वरदराज पानी पीने के लिए कुएँ की **जगत** पर गया। उसने देखा कि जगत

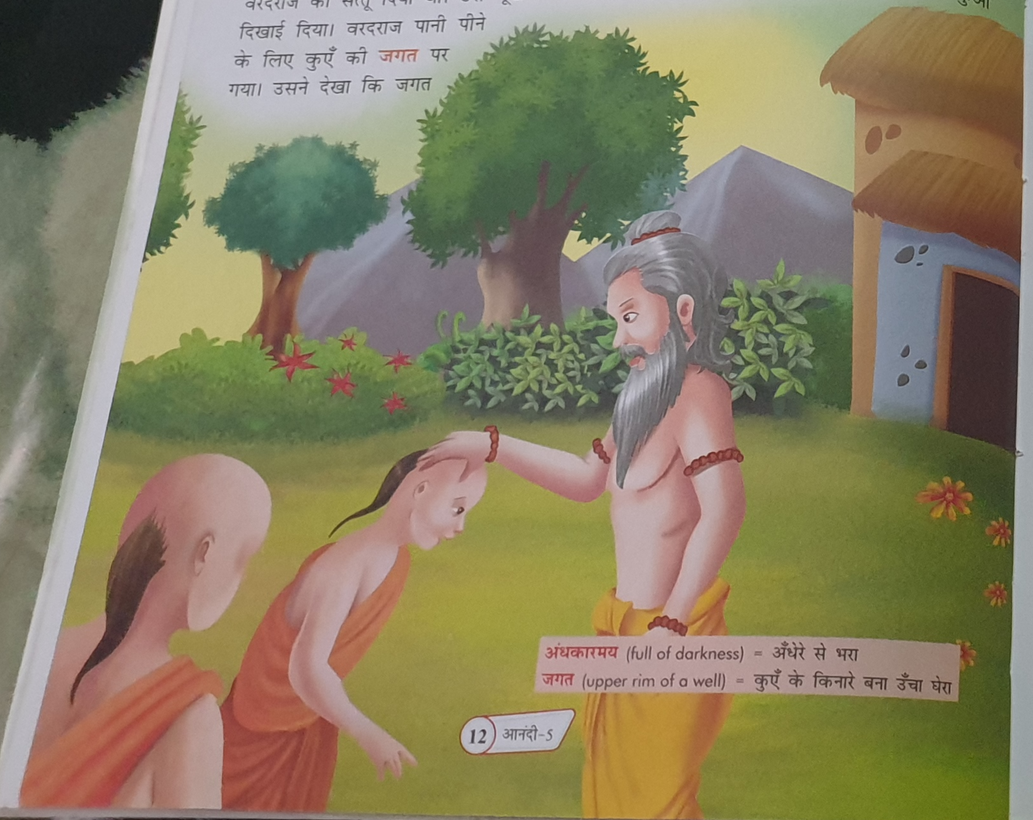

अंधकारमय (full of darkness) = अँधेरे से भरा
जगत (upper rim of a well) = कुएँ के किनारे बना उँचा घेरा

पर पानी खींचने की रस्सी की रगड़ से जगह-जगह पत्थर पर निशान और मिट्टी के घड़ों को रखने से जगत में गड्ढे पड़ गए हैं। वरदराज के दिमाग में बिजली-सी **कौंध** गई। उसने सोचा, 'बार-बार की रगड़ से यह रस्सी पत्थर को काट सकती है और इन मिट्टी के घड़ों से पक्के पत्थरों पर गड्ढे बन सकते हैं, फिर क्या लगातार परिश्रम करने से मुझे पढ़ना-लिखना नहीं आ सकता?'

वह स्वयं ही बोल उठा, ''मैं परिश्रम करूँगा। फिर देखता हूँ, मुझे विद्या कैसे नहीं आती?'' इस समय उसके स्वर में **आत्मविश्वास** झलक रहा था।

वरदराज ने कुएँ पर रखे **डोल** से पानी निकाला, हाथ-मुँह धोए और खाना खाकर पेट भर पानी पीया। फिर, वह आश्रम की ओर लौट पड़ा। अबकी बार उसका मन भारी नहीं था। उसकी उदासी दूर हो चुकी थी। अब वह दूसरी ही तरह का वरदराज लग रहा था।

सूर्यास्त होने से पहले ही वरदराज आश्रम जा पहुँचा। उसने गुरु जी के चरण छूकर उन्हें प्रणाम किया। गुरु जी उसे देखते ही बोले, ''बेटा वरदराज! तुम घर नहीं गए क्या?''

वरदराज नम्रतापूर्वक बोला, ''नहीं गुरु जी! आधे रास्ते से लौट आया। अब मेरी आँखें खुल गई हैं। मैंने निश्चय किया है कि मैं पूरी लगन और परिश्रम से पढ़ूँगा। आज से आपको कभी कुछ कहने का अवसर नहीं दूँगा।''

गुरु जी का दिल पसीज गया। बोले, ''ठीक है, कुछ दिन और देख लेता हूँ। तुम जो कुछ कह रहे हो, उसे कर दिखाओगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।''

वरदराज के साथियों को जब पता चला कि वह फिर वापस आ गया है तो वे तरह-तरह की बातें बनाने लगे। वरदराज ने उन सबकी परवाह नहीं की। उसने पढ़ाई प्रारंभ की। अब तो उसकी भूख और नींद, पता नहीं, कहाँ भाग गई। वह रात को देर तक पढ़ता रहता और प्रातः सबसे पहले उठ जाता। दिन में भी वह एक क्षण **व्यर्थ** नहीं गँवाता था।

फिर क्या था! जो पाठ याद करना वरदराज को ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने की तरह कठिन लगता था वही अब सरल हो गया। गुरु जी और आश्रम के दूसरे शिष्य वरदराज के इस **परिवर्तन** को देखकर आश्चर्यचकित थे। शीघ्र ही, उसकी गिनती **कुशाग्रबुद्धि** वाले शिष्यों में होने लगी। यह लगन और कठोर परिश्रम का चमत्कार था।

आगे चलकर वही वरदराज संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान बने। उनके जीवन की इस घटना से संबंधित एक लोकोक्ति ही प्रसिद्ध हो गई है–

करत-करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, **सिल** पर परत निसान।।

–संतराम वत्स्य

कौंधना (to flash) = चमकना **आत्मविश्वास** (self-confidence) = अपने-आप का भरोसा
डोल (bucket) = बालटी **व्यर्थ** (waste) = बेकार **परिवर्तन** (change) = बदलाव
कुशाग्रबुद्धि (intelligent) = तेज बुद्धि **रसरी** (rope) = रस्सी **सिल** (stone) = पत्थर

Date
10/6/2020 CLASS: V HINDI 2ND LANG.

आनंदी हिन्दी पाठमाला

CH: अभ्यास का महत्त्व

(क) सही विकल्प चुनिए :

(1) वरदराज आश्रम में लौटा —

(क) रात होने पर ☐

(ख) सूर्योदय होने के पहले ☐

(ग) सूर्यास्त होने से पहले ☑

(2) वरदराज आश्रम लौट आया था क्योंकि —

(क) उसकी आँखें खुल गई थी ☑

(ख) उसे गुरु जी ने बुलाया था ☐

(ग) वह थक गया था।

(3) कुँए के पत्थर पर किसके आने-जाने से निशान पड़ जाता है —

(क) डोल के आने-जाने से ☐

(ख) डोल में बँधी रस्सी के आने-जाने से ☑

(ग) कुँए के पास जाने पर ☐

(ख) पाठ के अनुसार, इन कथनों के सामने सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगाइए —

(1) वरदराज मंदबुद्धि का बालक था। ✓

(2) वरदराज पाँच वर्षों में भी कुछ नहीं सीख पाया था। ✓

(3) गुरु जी ने वरदराज को घर जाने की सलाह दी। ✓

(4) गुरु जी ने रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। ✗

(5) वरदराज ने कुँए पर रखे डोल से पानी निकाला। ✓

(6) वरदराज तेज बुद्धिवाला बालक बन गया। ✓

(ग) इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) वरदराज की आयु तब क्या थी जब वह आश्रम में पढ़ने गया था?

Ans) जब वरदराज आश्रम में पढ़ने गया था तब उसकी उम्र पाँच वर्ष थी।

(2) खाना खाने और पानी पी लेने के बाद वरदराज कहाँ लौटे?

Ans) खाना खाने और पानी पी लेने के बाद वरदराज आश्रम वापस लौटे।

(3) आश्रम पहुँचने पर गुरु जी ने वरदराज से क्या पूछा ?

Ans) आश्रम पहुँचने पर गुरु जी ने वरदराज से यह पूछा कि वह घर क्यों नहीं गया ।

(4) वरदराज ने किसकी परवाह नहीं की ?

Ans) वरदराज की साथियों ने वरदराज को देखकर तरह-तरह की बातें बनाने लगे । वरदराज ने उसकी परवाह नहीं की ।

(5) वरदराज किस भाषा के विद्वान बने ?

Ans) वरदराज संस्कृत के विद्वान बने ।

(ख) प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) वरदराज के पिता ने उसे आश्रम में किसलिए भेजा था ?

Ans) जब वरदराज पाँच वर्ष का था तब उसके पिता ने उसे पढ़ने के लिए आश्रम भेजा था ।

(2) वरदराज का मन पढ़ाई में क्यों नहीं लगता था ?

Ans) वरदराज मंदबुद्धि बालक था । उसे कुछ याद नहीं रहता था । वह एक वर्ष की पढ़ाई में कई-कई वर्ष लगाता था । उसका मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था ।

(3) गुरु जी ने वरदराज को घर लौटकर क्या करने को कहा ?

Ans) गुरु जी ने वरदराज से कहा कि वह वरदराज को कितना पढ़ाया और समझाया परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ । इसलिए गुरु जी ने उसे घर जाकर काम-काज सीखने की सलाह दी ।

(4) वरदराज की चिंता का कारण क्या था ?

Ans) वरदराज की चिंता का यही कारण था कि वह घर जाकर पिता जी को क्या मुँह दिखाएगा । वह कैसे कहेगा कि गुरु जी ने उसे पढ़ाने से मना कर दिया । लोग क्या कहेंगे कि पिता तो विद्वान हुए और बेटा मूर्ख ।

(5) वरदराज ने कुँए पर क्या देखा ?

Ans) वरदराज ने देखा कि जगत पर पानी खींचने की रस्सी की रगड़ से जगह-जगह पत्थर पर निशान और मिट्टी के घड़ों को रस्से से जगत में गड्ढे पड़ गए हैं ।

(6) वरदराज ने आश्रम में लौटकर किस प्रकार पढ़ाई प्रारम्भ की ?

Ans) वरदराज ने आश्रम में लौटकर पढ़ाई प्रारंभ की । पढ़ाई के कारण उसे सुख और नींद का पता नहीं चलता । वह रात देर तक पढ़ता और प्रातः सबसे पहले उठ जाता । वह एक क्षण भी नहीं गंवाता था ।

(ङ) सही उत्तर चुनिए –

(1) मंदबुद्धि का विलोम शब्द है –

(क) तेज बुद्धि [✓] (ख) कुशाग्रबुद्धि [ ]

(ग) तीव्रबुद्धि [ ]

(2) शिष्य का समानार्थी शब्द है –

(क) चेला [✓] (ख) पढ़ाकू [ ] (ग) विद्यार्थी

(3) इस शब्द से संयुक्त व्यंजन आया है –

(क) आश्रम [ ] (ख) विद्या [✓]

(ग) वर्ष [ ]

(च) इन शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए –

(1) बेटा - बेटी (2) बालक - बालिका

(3) पिता - माता (4) शिष्य - शिष्या ।